M–231

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्यAssignment Workसत्र – जुलाई–जून 2025–26

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय –वेद निरूक्त एवं वैदिक साहित्य **प्रश्नपत्रः प्रथम**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः–परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ– अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब –अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स –लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द –र्अ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड–अ

1. पुरुष सूक्त के देवता कौन हैं ?
2. 'वृषलः' का अर्थ क्या है ?
3. रुदः का अर्थ लिखिए।
4. शत्रु नाशनम् सूक्त में कौन–सा छन्द है ?
5. 'शुक्रम' का क्या तात्पर्य है ?
6. 'सुपथा' का अर्थ लिखिए।
7. ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ का नाम लिखिए।
8. वेद का मुख किसे कहते हैं ?

खण्ड–ब

9. पदपाठ का तात्पर्य लिखिए।
10. उच्चावचेष्वर्थेषु का अर्थ लिखिए।
11. निघण्टु का तात्पर्य क्या है ?
12. 'न कर्म लिप्यते नरे' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
13. 'विद्ययामृतमश्नुते' का अर्थ लिखिए।
14. तैत्तिरीय ब्राह्मण का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड–स

15. वैदिक देवताओं में इन्द्र को महान क्यों माना जाता है ?
16. निरुक्त की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
17. 'अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते' का अर्थ लिखिए।
18. उपनिषद् पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड–द

19. अक्ष सूक्त में समाहित सामाजिक संदेश की विवेचना कीजिए।
20. काल सूक्त में वख्रणत समय की विशेषता लिखिए।
21. अद्वैत भाव क्या है ? इसकी सार्थकता की समीक्षा कीजिए।
22. वेदातों में ज्योतिष के महत्व को लिखिए।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड–इ

23. ईशावास्पोपनिषद् के दार्शनिक महत्व को लिखिए।
24. शतपथ ब्राह्मण के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2026 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परोक्षा सत्र जुन–जुलाई 2025–26 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2025–26 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मूल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**

M–232

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्यAssignment Workसत्र – जुलाई–जून 2025–26

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय –पालि प्राकृत एवं भाषा विज्ञान **प्रश्नपत्रः द्वितीय**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः–परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ– अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब –अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स –लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द –र्अ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड–अ

1. 'स्वप्नवासवदत्तम्' में किस प्राकृत का उपयोग किया गया है ?
2. 'रत्नावली' के रचयिता कौन हैं ?
3. 'मृच्छकटिकम्' का नायक कौन है ?
4. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में किस मछली के पेट से अँगूठी मिली थी ?
5. वैर किससे शान्त होता है ?
6. 'वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते' कहाँ से उद्धृत किया गया है ?
7. माण्डिक नामक चोर को शूली पर चढ़ाने वाले राजा का क्या नाम था ?
8. ब्रह्मदत्त के शासनकाल में बोधिसत्व किस योनि में उत्पन्न हुए ?

खण्ड–ब

9. 'बाबेरु जातकम्' की कथा अपनी शैली में लिखिए।
10. 'गाहा–सत्तसई' का सारांश लिखिये।
11. भाषोत्पत्ति के विविध सि(ान्तों की समीक्षा कीजिए।
12. वाक्य के आवश्यक तत्वों की व्याख्या कीजिए।
13. स्वनिम विज्ञान को स्पष्ट कीजिए।
14. रावणवहो के किसी एक पद्य की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड–स

15. 'वानरिन्दजातकम्' का सारांश लिखिए।
16. 'रत्नावली' नाटिका के प्राङ्कुतांश की समीक्षा कीजिए।
17. भाषा परिवर्तन का आधार क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
18. वैदिक भाषा की विशेषतायें बताइए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड–द

19. सम्यक् आचरण व सम्यक् दृष्टि की महत्ता स्पष्ट कीजिए।
20. खोतानी एवं मिश्रित प्राङ्कुत की विशेषताएँ बताइए।
21. भारतीय आर्यभाषाओं का परिचय दीजिए।
22. व्युत्पत्ति विज्ञान के इतिहास का विस्तृत वर्णन कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड–इ

23. लिपि विज्ञान को स्पष्ट करते हुए देवनागरी की विशेषताएँ बताइए।
24. भाषायी वर्गीकरण की समीक्षा कीजिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2026 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जुन–जुलाई 2025–26 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2025–26 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 पतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मूल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**

M–233

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्यAssignment Workसत्र – जुलाई–जून 2025–26

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय –व्याकरण एवं निबन्ध **प्रश्नपत्रः तृतीय**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 10**

नोटः–परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ– अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब –अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स –लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द –अर्ध दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई – दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड–अ

1. कारके किस प्रकार का सूत्र है ?
2. 'दृशेश्च' सूत्र से कौन–सी संज्ञा होती है ?
3. अधमर्ण किसे कहते हैं ?
4. 'रुच्' धातु के योग में कौन–सी विभक्ति होती है ?
5. 'हसनम्' में कौन–सा प्रत्यय है ?
6. 'प्रकृत्य' में कौन–सा प्रत्यय है ?
7. व्याकरणाध्ययन के गौड़ प्रयोजन कितने प्रकार के हैं ?
8. 'या विद्या सा विमुक्तये' किस प्रकार का निबन्ध है ?

खण्ड–ब

9. 'देवदत्तेन पाचयति यज्ञदत्तः' प्रयोग सि कीजिए।
10. 'अन्तरान्तरेण युक्ते' सूत्र की व्याख्या कीजिए।
11. 'भीत्रार्थानां भयहेतुः' को स्पष्ट कीजिए।
12. 'ब्राह्मणाय हितम्' प्रयोग को सि कीजिए।
13. 'असन्देहार्थं चाध्ययेयं व्याकरणम्' को स्पष्ट कीजिए।
14. 'अविद्वांस' पर प्रकाश डालिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड–स

15. 'उपान्वध्याङ्वसः' सूत्र की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
16. 'ड्डत्य यानां कर्तरि वा' सूत्र पर प्रकाश डालिए।
17. 'गुरोश्च हलः' सूत्र की व्याख्या कीजिए।
18. 'किमर्थो वर्णानामुपदेशः' की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड–द

19. निम्नांकित में से किन्हीं दो प्रयोगों को सि(कीजिए :
    - अ ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
    - ब वने उपवसति।
    - स उभयतः ड्डष्णं गोपाः।
20. सूत्रनिर्देशपूवक किन्हीं दो प्रयोगों को सि(कीजिए :
    - अ ग्रामादायाति।
    - ब हरये क्रुध्यति।
    - स कटे आस्ते।
21. निम्नलिखित में से किन्हीं दो सूत्रों की व्याख्या कीजिए :
    - अ तव्यात व्यनीयरः
    - ब अचो यत्
    - स गुरोश्च हलः

22. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए :

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसावाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि।।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड–इ

23. "सिद्धे शब्दार्थ सम्बन्धे" की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

24. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिये :

अ वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

ब षड्दर्शनानि

स आचारः परमोधर्मः

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2026 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जुन–जुलाई 2025–26 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2025–26 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मूल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**

M–234

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्रीय कार्यAssignment Workसत्र – जुलाई–जून 2024–25

एम.ए. (संस्कृत) पूर्व

विषय –भारतीय दर्शन **प्रश्नपत्रः चतुर्थ**

पूर्णांक : 30 **न्यूनतम उत्तीर्णांकः 12**

नोटः–परीक्षार्थी प्रत्येक खण्ड के निर्देशों को ध्यान से पढ़कर प्रश्नों को हल करें।

परीक्षार्थी हेतु निर्देश :

सत्रीय कार्य–1

खण्ड अ– अति लघुउत्तरीय प्रश्न (1 से 8) कुल 08 प्रश्न है, सभी प्रश्न अनिवार्य। प्रति प्रश्न 0.5 अंक उत्तर शब्द सीमा 1–2 शब्द या एक वाक्य।

खण्ड ब –अति लघुउत्तरीय प्रश्न (9 से 14) कुल 06 प्रश्न है जिसमें से कोई 04 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 01 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 75 या आधा पेज।

सत्रीय कार्य–2

खण्ड स –लघुउत्तरीय प्रश्न (15 से 18) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 03 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 02 अंक का होगा। उत्तर शब्द सीमा 150 या एक पेज।

सत्रीय कार्य–3

खण्ड द –र्अ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (19 से 22) कुल 04 प्रश्न है जिसमें से कोई 02 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न 04 अंक का होगा। शब्द सीमा 300 या दो पेज।

सत्रीय कार्य–4

खण्ड ई –दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (23 से 24) कुल 02 प्रश्न है जिसमें से कोई 01 प्रश्न हल करें। प्रति प्रश्न08 अंक का होगा। उत्तर की शब्द सीमा 600–750 या 4–5 पेज।

सत्रीय कार्य– 1

खण्ड–अ

1. पट का असमवायिकरण .... है।
2. कारण के कुल भेद .... हैं।
3. पंचीकरण किनका होता है ?
4. उपनिषद को प्रमाण मानकर विवेचना किया जाने वाला दर्शन .... है ?
5. सांख्य दर्शन के प्रणेता आचार्य .... हैं।
6. सांख्य प्रतिपादित तत्वों की संख्या .... है।
7. योगदर्शन के प्रणेता आचार्य .... हैं।
8. ब्रह्मसूत्र के संकलनकर्त्ता .... हैं।

खण्ड–ब

9. उपाधि का लक्षण लिखिए।
10. सांख्य दर्शन के अनुसार दुःख निवारण के उपायों की व्याख्या कीजिए।
11. सविकल्प समाधि का परिचय दीजिए।
12. चार्वाक का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
13. सांख्य के अनुसार लिंग सूक्ष्म एवं स्थूल शरीर की व्याख्या कीजिए।
14. योग के आठ अंगों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

सत्रीय कार्य– 2

खण्ड–स

15. "पीनो देवदत्तः दिवा न भुङ्क्ते" में कौन–सा प्रमाण है, स्पष्ट कीजिए।
16. सांख्य दर्शन में सत्कार्यवाद के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।
17. वेदान्त दर्शन के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति का वर्णन कीजिए।
18. आस्तिक दर्शन का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

सत्रीय कार्य– 3

खण्ड–द

19. समवायिकारण तथा असमवायिकारण की व्याख्या कीजिए।
20. सांख्यदर्शन का संक्षिप्त परिचय लिखिए।
21. ज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति किससे होती है ?
22. बौद्ध धर्म के अष्टांग मार्ग की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य– 4

खण्ड–इ

23. अनुमान प्रमाण के लक्षण एवं भेदोपभेद का सविस्तार वर्णन कीजिए।
24. जैन दर्शन के अनुसार प्रमाणों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

आवश्यक निर्देश :–

1. **सत्रीय लेखन कार्य को घर से लिखकर उत्तरपुस्तिका दिनांक 28 फरवरी 2026 तक संबंधित अध्ययन केन्द्र में जमा करें। सत्रीय कार्य स्व–हस्तलिखित होना चाहिए। दूसरे के द्वारा लिखा गया, फोटोकापी या पुस्तक का हिस्सा चिपकाना अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।**
2. **छात्र सत्रीय कार्य लेखन हेतु अन्य संदर्भित पुस्तकों का भी उपयोग कर सकते है।**
3. **सत्रांत परीक्षा सत्र जुन–जुलाई 2025–26 का सैद्धांतिक प्रश्न पत्र का स्वरूप सत्रीय कार्य जुन–जुलाई 2025–26 जैसा ही रहेगा।**
4. **सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में छात्र द्वारा किए गए अध्ययन एवं लेखन, विषय की व्याख्या तथा लेखन में मौलिकता को आधार बनाया जायेगा। इसमें अध्ययन लेखन पर अधिकतम 60 प्रतिशत (18 अंक) दिया जावेगा, विषय–वस्तु की व्याख्या के लिए अधिकतम 20 प्रतिशम (6 अंक) तथा सृजनात्मक, मौलिक–सोच प्रदर्शित होने पर अधिकतम 20 प्रतिशत (6 अंक) प्राप्त हो सकते है। इस प्रकार मल 100 प्रतिशत (30 अंक) का विभाजन रहेगा।**